



Amire Ahle Sunnat Ke 121 Irshadat (Hindi)

हफ्तावार रिसाला : 323

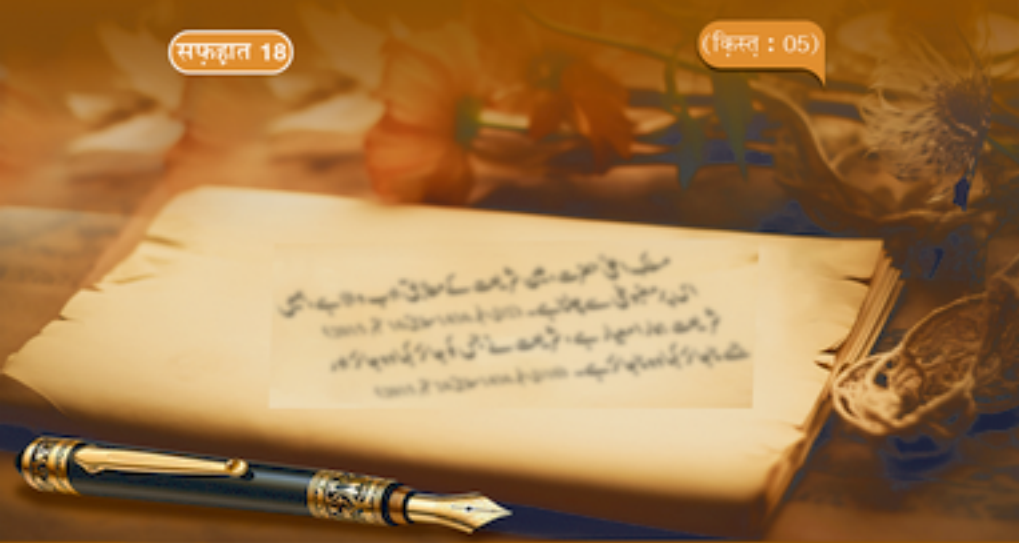
Weekly Booklet : 323

शेखे तुरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी رحمۃ اللہ علیہ के मुस्तालिफ़ फ़रामीन का मज्मूआ

अमीरे अहले सुन्नत के 121 इर्शादात

सफ़हात 18

(किस्त : 05)



पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत के 121 इर्शादात (किस्त : 5)

दुआए खलीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत के 121 इर्शादात” पढ़ या सुन ले उसे अपनी इस्लाह करने के साथ साथ दूसरों को भी नेकी की दा'वत देने और बुराई से बचाने वाला बना ।
 أمين بجاہ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस ने मुझ पर जुमुआ के दिन दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे ।”
 (جمع الجوامع للسيوطي، 7/199، حديث: 22353)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

लोगों की हिदायत के ज़राएअ में से एक ज़रीआ अल्लाह पाक के नेक बन्दों के पास बैठना और उन के फ़रामीन पर अमल करना भी है, क्यूं कि औलियाए किराम की गुफ़्तगू में उमूमन कुरआनो हदीस का निचोड़ (खुलासा) होता है, नीज़ येह भी देखा गया है कि आम लोगों की बातें इस तरह दिल पर असर नहीं करतीं जिस तरह किसी वलिये कामिल की एक नज़र या कोई एक बात असर कर जाती है, इस की वजह येह भी हो सकती है कि येह अल्लाह वाले हर वक़्त अल्लाह को राज़ी करने, उस की इबादत करने और उस का कुर्ब हासिल करने में मसरूफ़ रहते हैं, जिस की बिना पर अल्लाह पाक इन्हें खुसूसी इन्आमातो इक्रामात से नवाज़ता है, जिस की

वजह से लोग इन से महबूबत करते हैं और इन की बातों को खास अहम्मियत देते हैं। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ** का शुमार भी अल्लाह पाक के नेक बन्दों में होता है, आप की हिक्मत भरी बातें सुनने वाला और आप की सोहबते बा बरकत इख्तियार करने वाला शख्स महरूम नहीं लौटता बल्कि इल्मो हिक्मत के बहुत से मोती अपने दामन में समेट कर जाता है और खुद को खुश नसीबों में शुमार करता है, लिहाजा आप भी येह रिसाला “अमीरे अहले सुन्नत के 121 इर्शादात” पढ़िये, आप की हिक्मत भरी बातों पर अमल करते हुए खूब खूब फ़ाएदे हासिल कीजिये :

- ❶ मस्लके आ'ला हज़रत, ऐन शरीअत के मुताबिक़ अदब वाला है, हमें इस पर मजबूती से चलना है। (2 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक़ 16 सितम्बर 2015 ई.)
- ❷ शरीअत हमारा मे'यार है, शरीअत ने जिस को जाइज़ कहा वोह जाइज़ और जिसे ना जाइज़ कहा वोह ना जाइज़ है।

(10 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक़ 24 सितम्बर 2015 ई.)

- ❸ “ईद मुबारक” सलाम करने के बा'द कहना चाहिये। और “ख़ैर मुबारक” कहने से पहले सलाम का जवाब दिया जाए।

(11 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक़ 26 सितम्बर 2015 ई.)

- ❹ ईद मुबारक दुआ है, इस का मा'ना है कि आप के हक़ में ईद बरकत वाली हो। (11 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक़ 26 सितम्बर 2015 ई.)

- ❺ पुर वक़ार तरीके से गले मिलना चाहिये। भींच लेना, गले मिलते हुए दूसरे को उठा लेना ग़ैर मुनासिब और ईज़ा का बाइस हो सकता है।

(11 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक़ 26 सितम्बर 2015 ई.)

- ❻ कहां क्या बोलना है, इस का शुअर होना चाहिये।

(18 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक़ 27 सितम्बर 2015 ई.)

﴿7﴾ सहीह मा'नों में मोहतातु फ़िद्दीन (दीनी तौर पर एहतियात करने वाला, जाइज़ ना जाइज़ का ख़याल रखने वाला) वोह है जो सवाब का हरीस (तलब गार) हो और बोलने से पहले सोचता हो ।

(18 ज़िल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक 27 सितम्बर 2015 ई.)

﴿8﴾ जब मज़दूर उजरत का हक़दार हो जाए तो बिला उज़्र (बिग़ैर किसी वजह के) उस की उजरत न रोकी जाए, फ़ौरन दे दी जाए । उसे धक्के न खिलाए जाएं ।

(2 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 8 जून 2016 ई. बा'दे अ़स्)

﴿9﴾ मैं पौने दो माह सय्यिदी कुत्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की सोहबत में रहा मगर कभी आप को क़हक़हा लगाते नहीं देखा ।

(25 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 30 जून 2016 ई. बा'दे तरावीह)

﴿10﴾ किताबों और माहनामों के सरे वरक़ (Title Page) पर आयाते कुरआनी न लिखी जाएं, क्यूं कि किसी बे वुजू ने क़स्दन उसे हाथ लगाया तो वोह गुनहगार होगा । (24 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 30 जून 2016 ई. बा'दे अ़स्)

﴿11﴾ हफ़तावार इज्तिमाअ में दीगर बरकतों के साथ साथ सोज़ो गुदाज़ (या'नी दिल का नर्म होना, ख़ौफ़े खुदा और इश्के मुस्तफ़ा में रोना) भी नसीब होता है ।

(23 जुल हिज्जा 1436 हि. मुताबिक 10 अक्टूबर 2015 ई.)

﴿12﴾ जब कोई कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ बयान कर रहा हो तो कोई ऐसी हरकत न करें जो अपने या दूसरों के लिये बे तवज्जोही (तवज्जोह में रुकावट) का बाइस बने

(3 मुहर्रम, 1437 मुताबिक 17 अक्टूबर 2015)

﴿13﴾ उमूमन लोग अपना मोबाइल फ़ोन किसी को देना पसन्द नहीं करते, उन में राज़ की बातें भी होती हैं, इस लिये किसी से मोबाइल नहीं मांगना चाहिये ।

(10 मुहर्रम 1437 हि. मुताबिक 21 अक्टूबर 2015 ई.)

﴿14﴾ हेयर ड्रेसर (Hair Dresser) अपनी दुकान पर येह तहरीर लगा दें :
 “यहां न दाढ़ी मूंड़ी जाती है और न ही एक मुठ्ठी से घटाई जाती है कि
 उलमाए किराम फ़रमाते हैं : “दाढ़ी मुंडाना और एक मुठ्ठी से घटाना दोनों
 गुनाह हैं और इस की उजरत लेना जाइज नहीं ।”

(10 मुह्रम 1437 हि. मुताबिक 21 अक्टूबर 2015 ई.)

﴿15﴾ जीना है तो ऐसे जियो कि ज़माना मिसाल दे ।

(20 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 25 जून 2016 बा'दे तरावीह)

﴿16﴾ चिश्ती, क़ादिरी, सोहरवर्दी और नक्शबन्दी सब एक दरिया की नहरें
 हैं, सब हमारे लिये क़ाबिले एहतिराम हैं ।

(11 मुह्रम 1437 मुताबिक 21 अक्टूबर 2015 ई.)

﴿17﴾ अहले इल्म और अहले इल्म के सच्चे सोहबत याफ़ता (पैरौकार)
 खुदकुशी नहीं करते । (25 मुह्रमुल ह्राम 1437 हि. मुताबिक 7 नवम्बर 2015 ई.)

﴿18﴾ इस्लामी बहनों को दो ज़ानू (अत्तहिय्यात में बैठने की तरह) बैठ कर
 खाना खाना बेहतर है । (25 मुह्रमुल ह्राम 1437 हि. मुताबिक 7 नवम्बर 2015 ई.)

﴿19﴾ च्यूटी को बिला ज़रूरत न मारें, बल्कि उसे अपने क़बीले से भी जुदा
 न करें, क्यूं कि येह क़बीले के साथ रहती है ।

(8 सफ़रुल मुजफ़्फ़र 1437 हि. मुताबिक 21 नवम्बर 2015 ई.)

﴿20﴾ मुझे “या सय्यिदी” न कहा जाए, बा'ज़ लोगों को ग़लत फ़हमी हो
 सकती है कि येह “सय्यिद” बन गया है, जब कि मैं मेमन हूं, इस तरह वोह
 गुनहगार होंगे, मैं ऐसों को गुनाह से बचाना चाहता हूं ।

(22 सफ़रुल मुजफ़्फ़र 1437 हि. मुताबिक 5 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿21﴾ मक्तबतुल मदीना (शो'बए अरबी कुतुब) से कम अज़ कम एक

अरबी किताब खरीदें, पढ़ने की सलाहियत न हो तो किसी सुन्नी आलिम को तोहफा दे दें। (22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 हि. मुताबिक 5 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿22﴾ सिर्फ़ मुस्तनद आलिमे दीन या उन का मुसद्दका कलाम पढ़ना चाहिये। (25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 हि. मुताबिक 7 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿23﴾ हुल्ल्या मज़हबी होने के साथ साथ ज़ेहन भी मज़हबी होना चाहिये। (यकुम रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 13 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿24﴾ इबादत में दिल का लगना, दिली सुकून सुरूर हासिल होना, सुरूर आना रूहानियत है। (यकुम रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 13 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿25﴾ मेरी ज़िन्दगी दा'वते इस्लामी है।

(यकुम रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 13 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿26﴾ 100 किताबें एक तरफ़, एक लम्हे की अच्छी सोहबत एक तरफ़।

(यकुम रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 13 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿27﴾ मुझे उर्दू से महब्बत है, क्यूं कि कन्जुल ईमान, तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, फ़तावा रज़विय्या, बहारे शरीअत वग़ैरा उर्दू में हैं।

(यकुम रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 13 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿28﴾ अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हर घर में ड्रॉइंग रूम वग़ैरा में किताबों की अल्मारी की तरकीब बनाई जाए और उस का नाम “मदनी लायब्रेरी” रखा जाए। (2 रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 14 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿29﴾ तमाम अशिक़ाने रसूल इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मदनी इल्लिजा (Request) है कि अपने घर, कारोबार की जगह, दफ़ातिर, क्लीनिक, शोरूम, वेर्टिंग रूम या अपने ड्रॉइंग रूम (बैठक) वग़ैरा में जहां भी बन पड़े “मदनी लायब्रेरी” काइम कीजिये।

(2 रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 14 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿30﴾ फ़ी ज़माना आंखों का कुप्ले मदीना लगाना मुश्किल है ना मुम्किन नहीं, बिगैर ज़रूरत घर से न निकले, घर से बाहर निकलना पड़े तो निगाहें नीची रखे, बे इख़्तियार किसी ना महूरमा पर नज़र पड़ जाए तो फ़ौरन निगाह हटा ले। ऐसे मक़ामात पर कम से कम जाए जहां औरतें बे पर्दा हों मसलन बाज़ार वगैरा। (2 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक़ 8 जून 2016 बा'दे अस्)

﴿31﴾ हमें घर की रोशनी के साथ साथ क़ब्र की रोशनी की भी फ़िक्र करनी चाहिये। (3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿32﴾ जश्ने मीलाद की खुशी में चरागां ज़रूर कीजिये और अपने जिस्म को सुन्नतों और अख़्लाके हसना से आरास्ता करने से भी ग़फ़लत न कीजिये। (3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿33﴾ इस्लाम कुरबानियों का मज्मूआ है, दीने इस्लाम पर अमल करने और इस की इशाअत (तब्लीग़) के लिये कुरबानी देना पड़ती है। (25 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक़ 30 जून 2016 ई. बा'दे तरावीह)

﴿34﴾ बिला इजाज़ते शर्ई मख़बी को भी तक्लीफ़ देने की इजाज़त नहीं (3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿35﴾ हमें मुसलमानों के लिये नर्म, नर्म, नर्म होना चाहिये। (3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿36﴾ मरने वाले के लिये सब से बड़ा तोहफ़ा दुआए मग़िफ़रत है। (3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿37﴾ ख़ौफ़े खुदा की बातें सन्जीदा और ग़म भरे अन्दाज़ में करना ही मुफ़ीद है। (3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿38﴾ सोने के लिये वोह चटाई इस्ति'माल की जाए जो उमूमन मुर्दे के नीचे

चारपाई पर रखते हैं ताकि मौत की याद आती रहे ।

(3 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 15 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿39﴾ नमाज़ में सूरतें बदल बदल कर पढ़ने से भी खुशूअ़ हासिल होता है ।

(9 जुमादल उख़्का 1437 हि. मुताबिक 19 मार्च 2016 ई.)

﴿40﴾ मेरी तरफ़ से इस्लामी बहनों को बारहवीं के मौक़अ़ पर सजावट देखने के लिये अपने घर से निकलने की इजाज़त नहीं ।

(4 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 16 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿41﴾ जो ग़ौसे पाक (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ) से जितना ज़ियादा अक्कीदत रखेगा उसे उतना ज़ियादा फ़ैज़ान (या'नी दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा) हासिल होगा ।

(5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿42﴾ मदीना नुज़ूले रहमत, बरकतों का मम्बअ़ (मर्कज़) और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पसन्दीदा शहर है ।

(5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿43﴾ ईमान का ज़ाएअ़ होना सब से बड़ी मुसीबत है ।

(5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿44﴾ सय्यिद हमारे सर के ताज हैं ।

(5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿45﴾ ना'त शरीफ़ पढ़ना इबादत है ।

(5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿46﴾ जो दरे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) का जितना बड़ा फ़कीर है वोह उतना ही बड़ा अमीर है । (5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿47﴾ तंग गलियों में जुलूसे मीलाद निकालने के बजाए, कुशादा जगह की

तरकीब बनाई जाए, गाड़ी चलाने और पैदल चलने वालों को तकलीफ न हो। (5 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 17 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿48﴾ अख़्बारात में मुक़द्दस तहरीरें भी होती हैं, इस लिये उस से हाथ साफ़ न किये जाएं। (3 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 8 जून 2016 ई. बा'दे तरावीह)

﴿49﴾ मुसल्मानों पर बिला वज्ह शक करना छोड़ दें और हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखें कि मुसल्मानों से हुस्ने ज़न रखना कारे सवाब है।

(24 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 30 जून 2016 हि. बा'दे अस्)

﴿50﴾ हमें हर आज्माइश पर सब्र और हर ने'मत पर शुक्र अदा करना है।

(6 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 18 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿51﴾ रबीउल अव्वल में मीलादे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की खुशी और अज़मते मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के इज़हार की निय्यत से चरागां करना कारे सवाब है। (7 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 19 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿52﴾ जश्ने मीलादे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) में हुस्ने निय्यत और शरीअत की पासदारी (या'नी शरीअत पर अमल) ज़रूरी है।

(8 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 20 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿53﴾ जश्ने विलादत पर झन्डा लहराने से खुशी का इज़हार होता है।

(8 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 20 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿54﴾ ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुज्रए मुबारका, मिम्बर शरीफ़ का दरमियानी हिस्सा “रौज़तुल जन्नह (या'नी जन्नत की क्यारी)” है। आम बोलचाल में लोग इसे रियाजुल जन्नह कहते हैं, मगर अस्ल लफ़ज़ “रौज़तुल जन्नह” है। (9 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 21 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿55﴾ FGN चैनल बोलती किताब है, इसे देखें और देखने की दा'वत भी दें,

येह कारे सवाब है । (9 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 21 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿56﴾ दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से अमलन वाबस्ता रहें, दोनों जहां की भलाइयां हासिल होंगी । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ**

(9 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 21 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿57﴾ नमाज तमाम कामों से ज़ियादा अहम है ।

(11 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 23 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿58﴾ हाजी मुश्ताक **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** के कहने पर मैं ने पहली मरतबा “मरहबा या मुस्तफ़ा” का ना'रा 12 रबीउल अव्वल को लगाया, **اَلْحَمْدُ لِلَّهِ** ! अब येह आम हो गया है । (12 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 24 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿59﴾ जश्ने विलादत मनाने से महब्बते रसूल में इज़ाफ़ा होता है ।

(12 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 24 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿60﴾ बारगाहे रिसालत में दो जहान की भलाइयों और मग़िफ़रत का सुवाल करना चाहिये । (13 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 25 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿61﴾ माल के बजाए, मौला की महब्बत मिल जाए तो क्या बात है ।

(13 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 25 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿62﴾ मुझे मज़हबी किताबों की कीमत को “हदिय्या” कहना पसन्द है ।

(13 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 25 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿63﴾ जुलूसे मीलाद में तफ़रीह नहीँ, एहतिरामन शिर्कत करें ।

(13 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 25 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿64﴾ बच्चों को अच्छे काम करने पर हौसला अफ़ज़ाई करते हुए इन्आम देना चाहिये । (15 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 26 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿65﴾ अल्लाह पाक से हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखना चाहिये कि वोह करीम है और मुझ से करम वाला ही मुआमला फ़रमाएगा, अपने करम से

मुझे रुस्वा नहीं करेगा और मेरी बख्शिश फ़रमा देगा ।

(15 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 26 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿66﴾ रबीउल अव्वल के बा'द चरागां वाली अश्या उतार लिया करें ।

(15 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 26 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿67﴾ तमाम आशिकाने रसूल यकुम रबीउल अव्वल को झन्डे लगाएं और ग्यारहवीं रबीउल आखिर में उतार लें ।

(15 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 26 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿68﴾ मदनी झन्डे, बड़े बड़े परचम और बैनर सब उतार कर महफूज कर लिया करें और अगले साल फिर लगाने की तरकीब किया करें ।

(15 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 26 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿69﴾ हर एक को चाहिये कि दूसरों से चीजें मांगने से बचे, अगर येह (न मांगने की) आदत पुख़्ता हो जाए तो इस के दुन्यावी फ़वाइद भी हासिल होते हैं ।

(20 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 31 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿70﴾ तौबा पर इस्तिक़ामत के लिये दीनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये ।

(20 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 31 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿71﴾ “बहारे शरीअत” की तीनों जिल्दें हर घर में होनी चाहिएं ।

(20 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 31 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿72﴾ मयके जा कर सुसराल की ख़ामियां और सुसराल आ कर मयके की ख़ूबियां बयान न करें । (22 रबीउल अव्वल 1437 हि. मुताबिक 02 जनवरी 2016 ई.)

﴿73﴾ ग्यारहवीं शरीफ़ के कई फ़ज़ाइल हैं, जिस से हो सके वोह इस का एहतियाम ज़रूर करे । जिस घर में हर माह ग्यारहवीं शरीफ़ की तरकीब होगी वोह इस की बरकात अपनी आंखों से देख लेगा ।

(24 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 30 जून 2016 ई. बा'दे अ़स्)

﴿74﴾ रिश्तेदारों में निकाह करने में हमआहंगी के ज़ियादा इम्कानात (Chances) हैं, मगर ताकीद येह है कि हमेशा अच्छी सीरत को पेशे नज़र रखा जाए। पहले सीरत फिर सूरत देखें।

(29 रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 09 जनवरी 2016 ई.)

﴿75﴾ अल्लाह पाक की राह में खर्च करना नफ्स पर बहुत गिरां (भारी) होता है, इस लिये जैसे ही निय्यत करें फ़ौरन दे दें क्यूं कि दिल भी बदल जाता है।

(29 रबीउल अब्वल 1437 हि. मुताबिक 09 जनवरी 2016 ई.)

﴿76﴾ कोई तक्रीब हो तो उस में मज़हबी रंग होना चाहिये, सालगिरह करनी हो तो फ़ातिहा पढ़ कर ईसाले सवाब की तरकीब बनाएं, तालियां और मर्द व औरत का इख़्तिलात (मेलजोल और कोई भी ग़ैर शर्ई काम) न हो।

(2 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक 12 जनवरी 2016 ई.)

﴿77﴾ मस्जिदे महल्ला का बहुत असर होता है, मकान उस महल्ले में लेना चाहिये जहां मस्जिद ग्यारहवीं व बारहवीं मानने वालों की हो।

(2 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक 12 जनवरी 2016 ई.)

﴿78﴾ कोशिश की जाए कि किसी का एहसान न लिया जाए, यूं खुददारी से वकार बुलन्द होता है।

(3 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक 13 जनवरी 2016 ई.)

﴿79﴾ वस्वसों का एक इलाज येह भी है कि उन की तरफ़ ध्यान न दें।

(4 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक 14 जनवरी 2016 ई.)

﴿80﴾ ग़लती तस्लीम करने से इज़्ज़त घटती नहीं, बढ़ती है।

(4 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक 14 जनवरी 2016 ई.)

﴿81﴾ अच्छा वोह है जो अल्लाह पाक व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हां अच्छा हो।

(5 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक 15 जनवरी 2016 ई.)

﴿82﴾ गौसे पाक और आ'ला हज़रत (رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهَا) के ख़िलाफ़ कुछ सुनने के लिये इल्यास कादिरी के कान बहरे हैं। हम इन के पीछे पीछे चल रहे हैं और येह हमें जन्नत में ले जाएंगे। اِنْ شَاءَ اللَّهُ

(6 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 16 जनवरी 2016 ई.)

﴿83﴾ औलियाए किराम का कुर्ब हर सूरत में मुफ़ीद है।

(6 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 16 जनवरी 2016 ई.)

﴿84﴾ जाती दोस्तियां तन्ज़ीमी कामों में रुकावट है।

(7 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 17 जनवर 2016 ई.)

﴿85﴾ हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ के बा'द इस्लामी भाइयों से मिला करें, यूंही न चले जाया करें, पुर तपाक तरीक़े (अच्छे अन्दाज़) से मिलने से वोह दीनी माहोल से वाबस्ता हो जाएंगे।

(7 रबीउल आख़िर 1437 मुताबिक़ 17 जनवरी 2016 ई.)

﴿86﴾ मिलन सार (ख़ुश अख़्लाक़) बन जाइये, अगर फ़ितूरतन (By nature) मिलन सार न हों तो तकल्लुफ़न (ज़बर दस्ती) मिलन सारी कीजिये।

(7 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 17 जनवरी 2016 ई.)

﴿87﴾ बहू अगर सास सुसर की ख़िदमत करेगी तो उसे शौहर की रिज़ा नसीब होगी। (22 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक़ 27 जून 2016 ई. बा'दे तरावीह)

﴿88﴾ जो दुआ याद करनी हो उसे लिख कर घर में उस मक़ाम पर आवेज़ां कर दें जिस पर नज़र पड़ती रहे, اِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ जल्द याद हो जाएगी।

(8 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 18 जनवरी 2016 ई.)

﴿89﴾ सास अपनी बहू को बेटी से ज़ियादा अहम्मियत दे तो घर अम्न का गहवारा बन जाए। (9 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 19 जनवरी 2016 ई.)

﴿90﴾ औलियाए किराम के मजारात व गुम्बद बनाने का मक्सद येह है कि लोग इन की तरफ़ रुजूअ करें, फ़ैज उठाएं और बरकत पाएं ।

(10 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 20 जनवरी 2016 ई.)

﴿91﴾ हर एक रोज़ाना एक नमाज़ी बनाए तो सारे मुसलमान नमाज़ी बन जाएं ।

(11 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 21 जनवरी 2016 ई.)

﴿92﴾ मेरे मुर्शिदे गिरामी कुल्बे मदीना, हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने मुझे मक्तूब (ख़त) रवाना फ़रमाया, जिस में बैअत करने की इजाज़त दी और तहरीर फ़रमाया : तुम्हारे सिल्सिले में एक भी नेक बन्दा दाख़िल हो गया तो إِنَّ شَاءَ اللهُ الْكَرِيمِ तुम्हारी बख़्शिश का बाइस होगा ।

(11 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 21 जनवरी 2016 ई.)

﴿93﴾ अपने आप को शख़्सियत (Personality) तस्लीम नहीं करना चाहिये, जिस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा और **अल्लाह** पाक उस से राज़ी हुवा और वोह जन्नत में चला गया तो हकीकत में वोह “बड़ा आदमी” है ।

(12 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 22 जनवरी 2016 ई.)

﴿94﴾ बा'ज अवकात सुवालात, मा'लूमात का ज़रीआ होते हैं ।

(12 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 22 जनवरी 2016 ई.)

﴿95﴾ मुसलमान को राहत पहुंचाना कारे सवाब है ।

(13 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 23 जनवरी 2016 ई.)

﴿96﴾ किसी के घर के सामने कचरा डालने से घर वालों को तकलीफ़ होती है, घर वालों से मुआफ़ी मांगें और **अल्लाह** पाक की बारगाह में भी तौबा करें ।

(13 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 23 जनवरी 2016 ई.)

﴿97﴾ किसी को राहत नहीं पहुंचा सकते तो तकलीफ़ भी न दी जाए ।

(13 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 23 जनवरी 2016 ई.)

﴿98﴾ दुन्या में जिसे दौलत मिल जाए उसे (मुत्लक़न या'नी हर ए'तिबार से) खुश किस्मत कहना दुरुस्त नहीं, दौलत तो इम्तिहान है ।

(13 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 23 जनवरी 2016 ई.)

﴿99﴾ “तफ़्सीरे सिरातुल जिनान” इल्म का बहुत बड़ा ख़ज़ाना है ।

(19 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 29 जनवरी 2016 ई.)

﴿100﴾ दुन्या वोह बुरी है, जिस से आख़िरत को नुक़सान पहुंचे ।

(19 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 29 जनवरी 2016 ई.)

﴿101﴾ आपस में (दीनी) किताबें तक्सीम करने का रवाज डालें ।

(20 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 30 जनवरी 2016 ई.)

﴿102﴾ अज़िज़ी व नरमी करें तो आप, सब की आंखों के तारे बन जाएंगे ।

(20 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 30 जनवरी 2016 ई.)

﴿103﴾ समझाना आता हो तो, इन्फ़िरादी तौर पर समझाना ज़ियादा फ़ाएदे मन्द है ।

(27 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 6 फ़रवरी 2016 ई.)

﴿104﴾ समझाना भी एक फ़न है ।

(27 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 6 फ़रवरी 2016 ई.)

﴿105﴾ बन्दे की आज़्माइश उस वक़्त होती है जब गुस्सा दिलाया जाए । जब मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई बात आ जाए तो बरदाश्त कर जाएं तो हम अच्छे, वरना अच्छे नहीं ।

(27 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 6 फ़रवरी 2016 ई.)

﴿106﴾ जो अल्लिम और पीर घर घर जा कर मिज़ाज पुरसी करते (ख़ैरियत पूछते), दुखदरद में हिस्सा लेते, हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी से पेश आते हैं, वोह लोगों के दिलों में उतर जाते हैं ।

(27 रबीउल आख़िर 1437 हि. मुताबिक़ 6 फ़रवरी 2016 ई.)

«107» दीन का काम कुरबानी मांगता है ।

(27 रबीउल आखिर 1437 हि. मुताबिक 6 फरवरी 2016 ई.)

«108» ख़ौफ़े खुदा और इश्के मुस्तफ़ा हमारा सरमाया है ।

(9 जुमादल उला 1437 हि. मुताबिक 18 फरवरी 2016 ई.)

«109» औलाद की इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ तरबियत करना और कुरआनी हुक्म पर अमल करना ज़रूरी है ।

(6 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 11 जून 2016 ई. बा'दे तरावीह)

«110» मुसल्मानों को अच्छा मशवरा देना या जाइज़ सिफ़ारिश कर देना भी मुसल्मान की हाज़त (ज़रूरत) पूरी करने में शामिल है । अच्छी निय्यत की सूरत में कारे सवाब (सवाब का काम) भी है ।

(10 जुमादल उला 1437 हि. मुताबिक 19 फरवरी 2016 ई.)

«111» हकीक़त में नेक वोह है जो दरबारे इलाही में नेक है ।

(3 रमज़ान 1437 हि. मुताबिक 9 जून 2016 ई. बा'दे अस्)

«112» नेकोकार के लिये येह ज़रूरी है कि वोह अपने आप को नेकोकार (नेक) न समझे, येही बुजुर्गों का दस्तूर (तरीक़ा) रहा है ।

(10 जुमादल उला 1437 हि. मुताबिक 19 फरवरी 2016 ई.)

«113» जाहिरी गुनाहों के साथ बातिनी गुनाहों की मा'लूमात हासिल करना ज़रूरी है ।

(10 जुमादल उला 1437 हि. मुताबिक 19 फरवरी 2016 ई.)

«114» बेटा पैदा हो तो येह निय्यत करें कि मैं अपने मदनी मुन्ने (बच्चे) को हाफ़िज़े कुरआन और जामिअतुल मदीना में दाख़िल करवा कर आलिम बनाऊंगा । اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ الْكَرِيْمُ (18 जुमादल उला 1437 हि. मुताबिक 27 फरवरी 2016 ई.)

«115» मैं जब गाड़ी में बैठा हूँ तो उमूमन सुवारी पर बैठने की दुआ पढ़ता या पढ़ाता, तौबा व तज्दीदे ईमान करता और सूरए कुरैश की तिलावत करता हूँ। (25 जुमादल ऊला 1437 हि. मुताबिक 5 मार्च 2016 ई.)

«116» ट्रान्सपोर्ट के मालिकान ड्राइवर हज़रात को ताकीद करें कि जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो गाड़ियां रोक कर खुद भी नमाज़ पढ़ें और मुसाफ़ि़रों को भी नमाज़ पढ़ने का कहें।

(25 जुमादल ऊला 1437 हि. मुताबिक 5 मार्च 2016 ई.)

«117» अल्लाह करे, ऐसा हो जाए कि ड्राइवर हज़रात मुसाफ़ि़रों को कहना शुरू कर दें : “आइये ! नमाज़ पढ़ लीजिये।”

(25 जुमादल ऊला 1437 हि. मुताबिक 5 मार्च 2016 ई.)

«118» नींद न आए तो “يَا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ” का विर्द करें।

(25 जुमादल ऊला 1437 हि. मुताबिक 5 मार्च 2016 ई.)

«119» तहबन्द या पाजामे की तरह जुब्बा भी टख़्ख़ों के ऊपर होना चाहिये।

(2 जुमादल उख़्रा 1437 हि. मुताबिक 12 मार्च 2016 ई.)

«120» क़बूलिय्यत के लिये इख़्लास शर्त है।

(2 जुमादल उख़्रा 1437 हि. मुताबिक 12 मार्च 2016 ई.)

«121» इस बात को हमेशा पेशे नज़र रखें कि नेकियों के बैलेन्स (Balance) में कमी नहीं आनी चाहिये और गुनाहों के बैलेन्स में इज़ाफ़ा नहीं होना चाहिये। (9 जुमादल उख़्रा 1437 हि. मुताबिक 19 मार्च 2016 ई.)

अगले हफ्ते का रिसाला

